Vol 6 Issue 7 August 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 7 | August - 2016

Indian Streams Research Journal

छायावाद के जनक ''मुकुटधर पाण्डेय जी का काव्य –सौन्दर्य''

प्रा. डॉ. भिमराव भाउराव मानकरे
हिन्दी विभाग प्रमुख, स्वातंत्र्य सैनिक सुर्यभानजी पवार कला महाविद्यालय, पूर्णा (जं.) जि. परभणी.

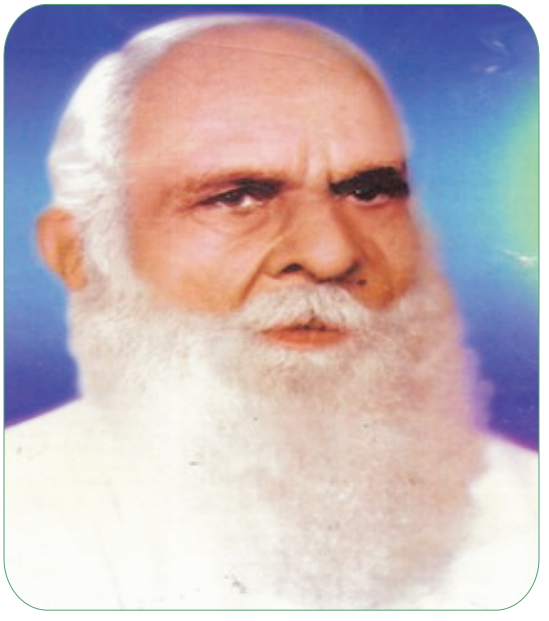

प्रस्तावना–

मुकुटधर पाण्डेय खडी बोली काव्यधारा के प्रथम मील स्तम्भ हैं। छायावादी काव्य का आगे चलकर जो विकास प्रसाद, पन्त और निराला जी के काव्य में हुआ उसका प्रारम्भिक रूप उनकी रचनाओं में मिलता है।

पाण्डेयजी का जीवन परिचय– खडी बोली के प्रारम्भ के कवियों में पांडेयजी का महत्वपूर्ण स्थान है। इनका जन्म छत्तीसगढ प्रांत के बालापुर नाम के ग्राम में सन 1895 में हुआ था। विद्वत्ता इनको पारिवारिक उत्तराधिकार के रूप में मिली। इनके बडे भाई श्री लोचन प्रसाद पांडेय हिन्दी और उडिया के ख्याति प्राप्त विद्वान थ। पाण्डेयजी पुरातत्व के भी विद्वान थे। पांडेय जी की स्कूली शिक्षा मैट्रिक तक ही रही। आपने घर पर ही स्वाध्याय किया।

प्रकृति और व्यक्तित्व– मुकुटधर पांडेय की प्रकृति और व्यक्तित्व सरलता और सात्विकता से परिपूर्ण रहा है। वे भांति–भांति से साहित्य–साधना में रत रहे। उसमें नाममात्र का भी प्रदर्शन नहीं है। वे प्रकृति और ग्राम्य–जीवन के प्रेमी थे। खेतों, नदी के किनारों और प्रकृति के खुले आंगन में भ्रमण की रूचि आप में बचपन से ही रही है। कृषक और मजदुरों के साथ में इनको विशेष आनन्द मिलता था। इनके इस सरल व्यक्तित्व तथा प्रकृतिप्रियता का आपकी रचनाओं पर विशेष रूप से प्रभाव पडा है।

काव्य–सौन्दर्य

पांडेयजी साहित्य–साधना की दृष्टि से धनी हैं। अपने बडे भाई श्री मुरलीधर पांडेय के साथ इन्होने पूजा के फूल, शैल वाला, लच्छमा, माया, परिश्रम आदि कई पुस्तकें लिखीं। आपने गद्य भी लिखा। छायावादी कविता के सम्बन्ध में इन्होने कई महत्वपूर्ण निबन्ध लिखे।

काव्य की विशेषताएँ – द्विवेदी युग के होने पर भी पांडेयजी की कविता में आधुनिकता अधिक मिलती है। इनके काव्य में द्विवेदी युग की शुष्क नीरसता नाम मात्र को भी नहीं है। आपकी कविता रहदयाभूति और भाव–व्यंजना से परिपूर्ण है। उसमें भावुक कल्पना का भी योग है। आपकी शैली में सबसे पहले लाक्षणिकता दिखाई पडी है। जो छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषता बन गई। इस रूप में वे छायावादी काव्य शैली के प्रवर्तक माने जाते है।

काव्य में रहस्य भावना – पांडेयजी के काव्य में रहस्य–भावना विशेष रूप से मिलती है। पाण्डेयजी जगत के विविध पदार्थों में रहस्यमय सत्ता का प्रमाण देखते है। इनकी कवताि की दुसरी विशेषता सरल स्वभाव के ग्रामीण–जीवन और उसके प्रति संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति है।

भाषा – पांडेयजी की भाषा विशुध्द खडी बोली है उसमें प्रसाद और माधुर्य दोनों ही गुण मिलते है। इनकी शैली में लाक्षणिकता, व्यंजकता, आदि छायावादी शैली की समस्त विशेषताएँ मिलती है। किन्तु उसकी सबसे बडी विशेषता है कि उसमें क्लिष्टता और अस्पृष्टता नाम मात्र की भी नहीं है। पांडेय जी की भाषा में एक अनुपम लालित्य मिलता है।

पांडेयजी द्विवेदी युग के काव्य और छायावाद के बीच की कडी है। इन्होने ही स्वच्छन्ततावादी काव्य या छायावादी काव्य की नींव डाली।

''एक ओर कविता अपने जन्म कुटीर से निकलकर बाहर पैर रखती है। दूसरी ओर उसे नियमों और रीतियों द्वारा चारों ओर से घेर लेने का प्रयत्न प्रारम्भ होता है। ..... मौलिकता का अभाव व्यक्तित्व का बाधक है। बिना व्यक्तित्व दिखाये कवि प्रतिपति किसी को नहीं मिल सकती है। वह व्यक्तित्व चाहे भाव में हो, भाषा में हो, छन्द में हो, या प्रकाशन रीति में हो, पर कविता में हो जरूर। ..... मुकुटधर छायावाद के शैशव के इतिहास हैं।''

छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ रहस्यात्मकता अभिव्यंजना के लाक्षणिक वैचित्र्य, वस्तु विन्यास की विश्रृंखलता, चित्रमयी भाषा और मधुमयी कल्पना है। ये सारी विशेषताएँ पांडेय जी की 'पुजा के फल' में मिलती हैं। 'कुररी के प्रति' शीर्षक कविता में यह करूण भावना मुखर हो उठी है।

''यह ज्योत्सना रजनी हटा सकती
क्या तेरा न विशाद?
या तुझको निज जन्मभूमि की
सत्ता रही है याद?''

निम्न उदाहरण में वेदना के दर्शन किये जा सकते है–

''देखकर प्रय को पडा त्रय–ताप में
वेदना होती हदय–धन को महा,
शोक–विह्ल वह कराह्–कराह् कर,
ऑसुओं की धार देता है बहा।''

कवि की दार्शनिक प्रवृत्तियॉ छायावादी काव्य के बहुत निकट हैं। निम्न उदाहरण में देखिए–

''प्राची में अरूणोदय अनुप,
है दिखा रहा निज दिव्य रूप।
लाली यह किसके अधरों की,
लख जिसे मलिन नक्षत्र हीर।''

निम्न उराहण में कवि ने सुख–सौंदर्य एवं सरलता में भी परात्पर सत्ता की झलक देखी है–

''हुआ प्रकाश तमोमय मग में,
मिला मुझे तू तत्क्षण जग में,
सम्पत्ति के मधुमय विलास में,
शिशु के स्वन्पोत्पन्न हास में,
वन्य कुसुम के रूजि सुवास में,
था तव कीडा स्थान।''

कवि अपने प्रेम के माध्यम से आराध्य तक पहुॅचना चाहता है–

''जब सन्ध्या को हट जावेगी भीड महान्।
तब जाकर मैं तुम्हें सुनाउॅगा निज गान।।
शून्य कक्ष अथवा कोने में रूक।
बैठ तुम्हारा करूॅ वहॉ नीरव अभिषेक।।''

इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि ''मुकुटधर पाण्डेय छायावाद के प्रमुख अग्रणी रहे हैं और उनका ऐतिहासिक प्रभाव अक्षुण्य है।''
(डॉ. रामरतन भनागर)

छायावाद के जनक – इस शताब्दी के प्रारम्भिक दशक में ही मुकुटधर पाण्डेय अपनी छायावादी रचनाऍ लेकर सामने आये। इन कविताओं में अॅग्रजी तथा तत्कालीन बॅगला कविताओं की प्रवृत्तियों का भी उद्घाटक हुआ है। बाद में छायावादी कवियों ने आपके मार्ग को ही अपनाया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है–

''मुकुटधर की रचनाऍ नरेतर प्राणियों की गतिविधी के राग का भी रहस्यपूर्ण परिचय देती हुई स्वाभाविक स्वच्छन्दता की ओर झुकती मिलेंगी।''

निम्नलिखित कवितांश को उपयर्सुक्त कथन के समर्थन में लिखा जा सकता है–

''मेरे जीवन की लघु तरणी,
ऑखों के पानी में तर जा।
मेरे उर का छिपा खजाना,
अहंकार का भाव पुराना,
बना आज तू मुझे दिवाना,
तप्त श्वेत बूॅदों में ढर जा।''

मुकुटधर के काव्य के महत्व के सम्बन्ध में शुक्ल जी का निम्न कथन दृष्टव्य है–

''द्विवेदी–युग में छायावाद के प्रारम्भिक पुरस्कर्ता जयशंकर प्रसाद, मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त, मुकुटधर पाण्डेय और लक्ष्मण सिंह सिध्द होते है।'' किंतू इन कवियों में उस समय मुकुटधर पाण्डेय ने ही नूतन पध्दति के साथ अपने को पूर्णतः तद्रूप किया।''

मुकुटधर पाण्डेय ने अपनी कविताओं में 'प्रीति' और 'प्रकृति प्रथा' को स्थान दिया। 'कुररी के प्रति,' ओस की निर्वाण प्राप्ति,' किंशुक के प्रति,' उषा,' रत्नाकर,' 'उद्गार' आदि कविताऍ प्रकृति की मनोरम छवि उपस्थित करती है। विश्व–बोध,' प्रार्थना', 'अधीरा ऑखें', आराधना' आदि कविताओं में छायावाद का आध्यात्मिक स्रूप अभिव्यक्त हुआ है।

छायावाद के व्याख्याता – मुकुटधर पाण्डेय छायावाद के व्याख्याता भी रहे! उन्होंने सन् 1920 में जबलपुर की 'श्री शारदा' में छायावाद पर विस्तृत लेख लिखे। इसके सम्बन्ध में डॉ. नामवर सिंह का निम्न कथन दृष्टव्य है:

''यह छायावाद का पहला निबन्ध होने के साथ ही अत्यन्त सुझ–बुझ भरी गम्भीर समीक्षा भी है। इस निबन्ध का ऐतिहासिक महत्व ही नहीं स्थायी महत्व भी है।''

काव्य कला– कवि मुकुटधर पाण्डेय की भाषा सरल, सुबोध तथा सरस है। वे खडीबोली हिन्दी के कवि है। उनकी भाषा में प्रसाद और माधुर्य दोनों गुण उपलब्ध है। खडी बोली के आरम्भिक काल में भी इतनी मधुर भाषा लिखना साधारण काम न था। आपकी भाषा भावानुगामिनी है। उसमें नाद–सौन्दर्य प्रर्याप्त मात्रा में है। आपकी भाषा काव्य गुणों से विभूषित है। उसमें दुरूहता कहीं भी नही है।

पण्डित मुकुटधर पाडण्डेय उन सपूतों में से है जो लीक छोडकर चलते है। द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता के विरोध में इन्होने अपने प्रगति के ओजस्वी स्वर छेडे। जब हिन्दी काव्य परम्परा लीक पर चल रहा था, तब श्री पाण्डेय ने प्रगतिवादी नवीन–धारा को अपनाया। विशेषता यह है कि उनकी प्रगतिवादी रचनाओं में भी आध्यात्मिकता झॉकती है। पीडितों और गरीबों से ऑसुओं में भी ईश्वर का आभास होता

Volume - 6 | Issue - 7 | August - 2016

है–

'दीन–हीन के अश्रु नीर में,
पतितों के परिताप पीर में।
सरल स्वभाव कृषक के स्वर में,
श्रम सीकर से सिंचित धन में,
तेरा मिला प्रमाण।'

तीव्र रहस्यानुभूति श्री पाण्डेय की रचनाओं की अन्य विशेषता है। उनकी यह अनुभूति चली आती हुई परम्परा की अनुभूति से भिन्न है। उन्हें संसार की प्रत्येक वस्तु में परमात्मा के दर्शन होते है। जुगनुओं की चमक में उन्हें प्रिय–तम–पथ के दोषों का आभास मिलता है और सरिता की कल–कल ध्वनि प्रियतम के गुणातुवाद करती हुई प्रतीत होती है।

ऐसा कवि जब मन्दिरों की आरती, मुल्लाओं की अजान और गिरजाघर की प्रार्थना के बजाय कृषकों के श्रम में ईश्वर की सच्ची प्रार्थना सुनता है तब यह मानना होगा कि उसकी रहस्यानुभूति प्रगतिवादी है– शाब्दिक और तात्विक दोनों अर्थो में।

पाण्डेयजी की भाषा में प्रसाद और माधुर्य दोनों गुण उपलब्ध होते हैं। खडी बोली के आरम्भिक–काल में भी इतनी मधुर भाषा लिखना साधारण कार्य नहीं था। इनकी भाषा भावानुगामिनी है और उन में नाद–सौन्दर्य पर्याप्त मात्रा में है।

काव्यकला और भाषा के सम्बन्ध में मुकुटधर पाण्डेय के कुछ अपने निजी सिध्दान्त थे जिके विषय में उन्होंने लिखा है–

''बिना संस्कृत शब्दों की सहायता के हिन्दी का चलना मुश्किल है, पर उसे जहॉ बने संस्कृत के बडे–बडे शब्दों से जिनका कि मतलब समझने में जनसाधारण को कठिनाई होती हौ, बचाना चाहिए। साथ ही वह उर्दु, फारसी और अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों को ले लें तो अच्छा है। ऐसे शब्दों का तस्सम और तद्भव जो रूप सर्वसाधारण में प्रचिलित हो वही रूप रहेने दिया जाना चाहिए।

सहाय्य ग्रंथ सूची :–

1.पुजा के फल – मुकुटधर पाण्डेयजी
2. कुररी के प्रति– मुकुटधर पाण्डेयजी
3.विश्वबोध – मुकुटधर पाण्डेयजी
4.प्रार्थना – मुकुटधर पाण्डेयजी
5.उद्गार – मुकुटधर पाण्डेयजी
6.रत्नाकर – मुकुटधर पाण्डेयजी
7.हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचंद्र शुक्ल

प्रा. डॉ. भिमराव भाउराव मानकरे
हिन्दी विभाग प्रमुख, स्वातंत्र्य सैनिक सुर्यभानजी पवार कला महाविद्यालय, पूर्णा (जं.) जि. परभणी.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org